ळूजबवउम बवतेम सत्र प्रथम, तृतीय एवं पंचम 2018–2019

बी0 ए0 प्रथम सत्र हिन्दी अनिवार्य

1. ''मध्यकालीन काव्य–कुन्ज'' भक्ति काल एवं रीतिकालीन कवियों के काव्य का संकलन व रोचक प्रेरक एवं प्रेरणास्पद था। यह हमें तद्युगीन संस्कृति एवं श्रेष्ठ साहियत्कारों का अध्ययन कराता है। विद्यार्थी इस युग के परिवेश से परिचित हुए।
2. छात्रों को आदिकाल के इतिहास एवं इतिहास लेखन परम्परा का परिचय हुआ।
3. व्याकरण अध्ययन द्वारा छात्रों को काव्य के तत्त्व, रस, अलंकार, काव्य के गुण, छंद और अलंकार का बोध हुआ।

बी0 ए0 तृतीय सत्र हिन्दी अनिवार्य :–

1. छात्रों के द्विवेदी युग, छायावादी युग एवं प्रगतिवादी कवियों की रचनाओं का अध्ययन अत्यंत रोचक था।
2. रीति कालीन साहित्य के अध्ययन से तद्युगीन दरबरी साहित्य एवं रीति साहित्य की जानकारी प्राप्त हुई।
3. प्रयोजन मूलक हिन्दी के अन्तर्गत कंप्यूटर, इन्टरनेट एवं अनुवाद की जानकारी प्राप्त हुई।

बी0 ए0 पंचम सत्र हिन्दी अनिवार्यः–

1. 'समकालीन कवियों के अध्ययन से छात्रों का समाज की दशा एवं दिशा का ज्ञान हुआ।
2. आधुनिक इतिहास के अध्ययन से विद्यार्थियों को तद्युगीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व्यवस्था का बोध हुआ।
3. संक्षेपण एवं पल्लवन एवं पत्र लेखन द्वारा व्यवहारिक हिन्दी का ज्ञान हुआ।

बी0 ए0 तृतीय सत्र हिन्दी ऐच्छिकः–

1. आधुनिक युग के कवियों के अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों को आधुनिक समाज का परिचय मिला।
2. 'कहानी एकादशी' का अध्ययन रोचक एवं प्रेरणास्पद था।
3. 'रीति काल' के अध्ययन से छात्रों को तद्युगीन दरबारी साहित्य एवं रीति कालीन की जानकारी प्राप्त हुई।

बी0 ए0 पंचम सत्र हिन्दी ऐच्छिकः–

1. 'कथावातायन' का अध्ययन रोचक एवं यथार्थवादी था।
2. 'समकालीन 'काव्य–प्रभास' के अध्ययन से तद्युगीन समाज की दशा एवं दिशा का ज्ञान हुआ।
3. आधुनिक साहित्य की विद्याओं उपन्यास, नायक, कहानी आलोचना, निबंध का विकास इत्यादि प्रेरक एवं उत्साहवर्द्धक रहे।

व्जबवउम बवतेम सत्र द्वितीय, चतुर्थ एवं षष्टम सत्र 2018–2019

द्वितीय सत्र – हिन्दी अनिवार्य :–

1. 'ध्रुवस्वामिनी' का अध्ययन बेहद प्रेरक था। ऐतिहासिक धरातल पर अधारित यह नाटक आधुनिक नारी की समस्या एवं विवाह समस्या को चित्रित करता है।
2. 'भक्ति काल' के अन्तर्गत भक्ति के उद्भव विकास का परिचय मिला। छात्र संत, सूफी, कृष्ण एवं राम काव्य की विशेषताओं एवं कवियों से परिचित हुए।
3. भाषा विज्ञान का परिचय प्रेरक एवं व्यवहारिक था।

बी0 ए0 चतुर्थ सत्र हिन्दी अनिवार्य :–

1. हिन्दी कहानियों का अध्ययन अत्यंत रोचक एवं प्रेरक था। कहनियों द्वारा छात्रों को परिवेश की मनोवैज्ञानिक, समाजिक, राष्ट्रीय, राजनैतिक एवं आंचलिक तथ्यों की जानकारी मिली।
2. विद्यार्थियों को आधुनिक गद्य काल की जानकारी मिली, विभिन्न गद्य विद्याओं का परिचय भी प्राप्त हुआ।
3. पारिभाषिक शब्दावली का अध्ययन अत्यंत प्रभावशाली एवं प्रेरक रहा।

बी0 ए0 षष्टम सत्र हिन्दी सर्ग :–

1. विद्यार्थियों ने आधुनिक काल के श्रेष्ठ निबंधों का अध्ययन किया। यह काफी रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक थे।
2. 'हरियाणा साहित्य' का परिचय भी ज्ञानवर्द्धक था।
3. प्रयोजन मूलक हिन्दी के अन्तर्गत पत्रकारिता के बारे में व्यापक जानकारी यथा फीचर लेखन, शीर्षक की संरचना, स्वतंत्र प्रेस, पत्र कारिता का स्वरूप आदि की जानकारी प्राप्त हुई।

बी0 ए0 चतुर्थ सत्र हिन्दी ऐच्छिक :–

1. सुदामाचरित का अध्ययन काफी प्रेरक था। इसमें श्री कृष्ण और सुदामा की भक्ति भावना एवं मित्रता को अत्यन्त मौलिक ढ़ंग से दर्शाया गया है।
2. क्रोध, दांत, गेंहू बनाम चना का अध्ययन गंभीर होने के साथ – साथ रोचक भी था।
3. आधुनिक साहित्य का अध्ययन भी प्रेरणास्पद था।

बी0 ए0 सत्र हिन्दी ऐच्छिक :–

1- 'मानस का हंस' का अध्ययन प्रेरक एवं ज्ञानवर्द्धक रहा।

2- 'निबंध के रंग' निबंध संकलन में अनेक निबंधों का अध्ययन काफी रोचक था।

3- 'साहित्यालोचन' में काव्य–शास्त्र का अध्ययन प्रभावशाली एवं ज्ञानवर्द्धक था।

26. 8 फरवरी, 2018 को वार्षिक 'उत्सव मेघा' उत्सव का आयोजन हिन्दी विभाग के मार्गदर्शन में कविता, पाठ एवं भाषण प्रतियोगिता में छात्रों की प्रतिभोगिता –

2018–19 हिन्दी दिवस

27. 14 सितम्बर 2018 को हिन्दी 'कविता पाठ' का आयोजन किया गया।
28. दिनांक 27, अक्तुबर 2018 को वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन।
29. दिनांक 6 अक्तुबर 2018 को छात्रों का प्रेंरणा शर्मा वरिष्ठ प्राध्यापिका हिन्दी विभाग के नेतृत्व में ऐतिहासिक नगरी दिल्ली का भ्रमण।
30. 31.10.2018 – 02.11.2018 को इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमैंन्ट एवं टैक्नोलाजी के युवा समारोह में प्रतियोगिता महाविद्यालय के छात्र तरूण कुमार को डपउपबासल ने तृतीय स्थान।
31. 13, फरवरी 2019 को महाविद्यालय के वार्षिक समारोह 'मेघा उत्सव' का आयोजन। हिन्दी विभाग द्वारा साहित्यिक गतिविधियों का मार्गदर्शन।
32. दिनांक 25,फरवरी 2019 को द्रोणाचार्य महाविद्यालय में जिला स्तरीय प्रतियोगितायों का आयोजन किया गया। जिनका मार्गदर्शन ड़ा0 मधुबाला गुप्ता एवं श्रीमति प्रेरणा शर्मा द्वारा किया गया। इसमें कोमल ने निबंध लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय एवं रितु ने कविता पाठ मं तृतीय स्थान प्रवीण हरीश एवं करिश्मा ने प्रश्नोत्तरी परीक्षा में तृतीय रहें

2019–2020:–

1. ड़ा0 मधुबाला गुप्ता के नेतृत्व व्त्म्छज।ज्प्छ च्त्ळत।डडम् का आयोजन किया गया जिसमें बी0 ए0 प्रथम वर्ष के छात्रों को महाविद्यालय एवं नियमावली की विस्तृत जानकारी दी गई।
2. दिनांक 20 अगस्त 2019 को हिन्दी विभाग की ओर से साहित्यिक गतिकिवधियों में श्रेत्रीय भाषणा प्रतिभोगिता का आयोजन।
3. श्रीमति प्रेरणा शर्मा के नेतृत्व में क्षेत्रीय युवासमारोह 2019 में छात्रों ने साहित्यिक प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता की । जिसमें छात्रों को संस्कृत श्लोक में तृतीय, पंजाबी कविता एवं उर्दू कविता को द्वितीय पुरूस्कार की प्राप्ति हुई। अन्तर्क्षेत्रीय युवासमारोह रोहतक में उर्दू कविता को प्रथम एवं संस्कृत श्लोक को द्वितीय स्थान प्राप्त।

व्नजबवउम बवतेम सत्र प्रथम, तृतीय एवं पंचम 2019–2020

बी0 ए0 प्रथम सत्र हिन्दी अनिवार्य

4. ''मध्यकालीन काव्य–कुन्ज'' भक्ति काल एवं रीतिकालीन कवियों के काव्य का संकलन व रोचक प्रेरक एवं प्रेरणास्पद था। यह हमें तद्युगीन संस्कृति एवं श्रेष्ठ साहियत्कारों का अध्ययन कराता है। विद्यार्थी इस युग के परिवेश से परिचित हुए।

5. छात्रों को आदिकाल के इतिहास एवं इतिहास लेखन परम्परा का परिचय हुआ।

6. व्याकरण अध्ययन द्वारा छात्रों को काव्य के तत्त्व, रस, अलंकार, काव्य के गुण, छंद और अलंकार का बोध हुआ।

बी0 ए0 पंचम सत्र हिन्दी अनिवार्यः–

4. 'समकालीन कवियों के अध्ययन से छात्रों का समाज की दशा एवं दिशा का ज्ञान हुआ।
5. आधुनिक इतिहास के अध्ययन से विद्यार्थियों को तद्युगीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व्यवस्था का बोध हुआ।
6. संक्षेपण एवं पल्लवन एवं पत्र लेखन द्वारा व्यवहारिक हिन्दी का ज्ञान हुआ।

बी0 ए0 तृतीय सत्र हिन्दी ऐच्छिकः–

4. आधुनिक युग के कवियों के अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों को आधुनिक समाज का परिचय मिला।
5. 'कहानी एकादशी' का अध्ययन रोचक एवं प्रेरणास्पद था।
6. 'रीति काल' के अध्ययन से छात्रों को तद्युगीन दरबारी साहित्य एवं रीति कालीन की जानकारी प्राप्त हुई।

बी0 ए0 पंचम सत्र हिन्दी ऐच्छिकः–

4. 'कथावातायन' का अध्ययन रोचक एवं यथार्थवादी था।
5. 'समकालीन 'काव्य–प्रभास' के अध्ययन से तद्युगीन समाज की दशा एवं दिशा का ज्ञान हुआ।
6. आधुनिक साहित्य की विद्याओं उपन्यास, नायक, कहानी आलोचना, निबंध का विकास इत्यादि प्रेरक एवं उत्साहवर्द्धक रहे।